WWJMRD 2020; 6(10): 63-64
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

अनुराधा सिंह
शोध–छात्रा (संगीत)
महात्मा गाँधी चित्रकूट, ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट
जिला–सतना (म0प्र0), भारत

Correspondence:
अनुराधा सिंह
शोध–छात्रा (संगीत)
महात्मा गाँधी चित्रकूट, ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट
जिला–सतना (म0प्र0), भारत

''वैश्वीकरण के सन्दर्भ में भारतीय संगीत का अवलोकन''

अनुराधा सिंह

सारांश
वर्तमान समय में वैश्वीकरण को आज जितना व्यापक विषय के रूप में माना जाता है उतना ही उसमें विभिन्न मत है। कुछ विद्वान इसे एक आर्थिक संकल्पना मात्र समझते हैं। उनके लिए वैश्वीकरण उदारीकरण है, निवेश है और निजीकरण है। कुछ विचारक वैश्वीकरण का आशय सांस्कृतिक आदान–प्रदान के सन्दर्भ में निकालते हैं और अन्य की दृष्टि में वैश्वीकरण वृहद् सामाजिक प्रक्रिया है जो सम्पूर्ण मानव–जीवन को अपने अन्दर समाहित कर लेती है। संगीत हमारी भारतीय संस्कृति का अटूट अंग है और जब संस्कृति में कोई बदलाव आता है तो उससे संगीत भी निश्चित रूप से प्रभावित होता है। वैश्वीकरण ने हमारी मूल्य आधारित भारतीय संगीत की परम्परा को अवश्य प्रभावित किया है।

शब्द–कुंजी– वैश्वीकरण, भारतीय, संस्कृति, निजीकरण, संगीत, परिवर्तन, अवलोकन, परम्परा।

प्रस्तावना
एक समय ऐसा रहा है जब वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग व्यापारिक तथा आर्थिक गतिविधियों के रूप में किया जाता रहा है, परन्तु अब सूचना प्रौद्योगिकी, संचार माध्यम इत्यादि के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक इत्यादि क्षेत्र भी इससे मुक्त ना रह सके।
वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं एवं घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपान्तरण की प्रक्रिया है। इसको एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं एवं एक साथ काम करते हैं। यह प्रक्रिया तकनीकी, आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक ताकतों का एक संयोजन है। विख्यात नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ0 अमर्त्यसेन के अनुसार, ''वैश्वीकरण नया नहीं है और न ही पाश्चात्यकरण मात्र है। प्रयास, पर्यटन, प्रवसन तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान तथा ज्ञान के प्रचार–प्रसार के माध्यम से यह हजारों वर्षों से विकसित होता चला आ रहा है।''[1]
भारतवर्ष की विचारधारा जो वेदान्त, वेद, पुराण, उपनिषद, षड्दर्शन, शैवदर्शन, आगम एवं वैष्णव दर्शन में समाहित है। शताब्दियों से यह विचारधारा भारत पर राज करने वाले पराक्रमी देशों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष इन दोनों ही रूपों में प्रभावित करती आ रही है। जिसका प्रतिफलन सभी कलाओं पर और प्रमुख रूप से संगीत कला पर पड़ा। हमारे शास्त्रीय संगीत में अनेक सदियों से विभिन्न चिन्तन, आध्यात्म, दर्शन एवं अलग–अलग आस्थाओं का समावेश हुआ और ये प्राचीनकाल से ही वैश्वीकरण का आर्विभाव दिखलाई देता है, जिसके कारण हम संक्रमण या विभिन्न संस्कृतियों का सकारात्मक समन्वय कह सकते हैं। ''यह बात इस ब्रह्माण्ड की तरह सत्य है कि भारतीय संस्कृति व संगीत प्राचीनतम है। युग विवर्तन के साथ–साथ यहाँ गांव, नगर, मठ, गुरूकुल, शिल्प साहित्य, विज्ञान, धर्म, दर्शन इत्यादि का विकास हुआ।''[2]

Jadunath Sarkar: India through the Ages, P.2, Calcutta, 1960
आधुनिक समय में भारतीय संगीत की विभिन्न विधाओं जैसे–वाद्य संगीत, कण्ठ संगीत, नृत्य संगीत, संगीतशास्त्र आदि इन सभी पर पाश्चात्य प्रभाव देखने को मिलता है। आज हारमोनियम, क्लैरियोनेट, गिटार, पियानों जैसे अनेक पाश्चात्य वाद्यों को हमने अपने भारतीय संगीत में स्वीकार तो किया ही है साथ ही इन विदेशी वाद्यों पर शास्त्रीय संगीत का सफलतापूर्वक वादन भी किया जा रहा है। इस तरह तालमाला, ताल लहरा, इलेक्ट्रिक तानपुरा, ट्यूनर इत्यादि अनेक डिजिटल उपकरण भी हमारे भारतीय संगीत में विशेष महत्व रखते हैं।
आधुनिक समय में पाश्चात्य प्रभाव से ही संगीत के अध्ययन क्षेत्र में विस्तार हुआ और संगीतशास्त्र के ज्ञान को वैज्ञानिक स्वरूप देने के उद्देश्य से ध्वनि विज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र, चिकित्सा एवं दर्शन आदि

क्षेत्रों में भी अध्ययन किया जाने लगा। न्यूयॉर्क के डॉ0 एडवर्ड पोलाबास्की के अनुसार कहा कि ''संगीत से रक्त संचालन प्रभावित होता है और शिराओं में नवजीवन का संचार होता है उन्होंने ध्वनि तरंगों का पथरी रोग पर विशेष प्रभाव देखा।''

वैश्वीकरण की प्रक्रिया आधुनिक समय का यथार्थ है जो मानव–जीवन के सभी पक्षों को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर रही है। वर्तमान समय में हमारे मूल्य व मान्यताओं में अनेक परिवर्तन प्रतीत हो रहे हैं। इस बदलाव ने व्यक्ति का केवल सामाजिक एवं भौतिक रूप ही परिवर्तित नहीं किया अपितु व्यक्ति की मानसिकता को भी बदला है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप सम्पूर्ण संसार की आज दूरियाँ सिमट गयी हैं। वर्तमान समय में विश्व का संकुचन हो रहा है या हम दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है कि सम्पूर्ण विश्व एक वैश्विक ग्राम हो गया है जहाँ कोई भी सूचना सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाएँ प्रसारित हो रही हैं जैसे–व्हाट्सएप, फेसबुक, यू–ट्यूब, इण्टरनेट इत्यादि के द्वारा सूचनाएँ तीव्र गति से एक देश से दूसरे देश तक सूचनाओं का आदान प्रदान बढ़ा है। ''साइबर मीडिया'' जो कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह इण्टरनेट से जुड़ा हुआ है। इण्टरनेट जनसंचार का सबसे खुला व्यापक और बहु–आयामी माध्यम है। इसमें मुद्रण, ध्वनि (रेडियो), दृश्य (दूरदर्शन), फिल्म आदि सभी प्रकार के संचार माध्यमों का संगम है। इसकी व्याप्ति एक साथ विश्व भर में होती है। इसके विश्वव्यापी जाल (www) के माध्यम से पल भर में पूरे विश्व के ज्ञान और मनोरंजन का अंग बना जा सकता है।''[4]

इस तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप संगीत के शास्त्रात्मक और क्रियात्मक दोनों ही पक्षों को समद्ध बनाने में बहुत सहयोग मिला है। वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से वरिष्ठ कलाकारों की कला को चिरकाल तक संग्रहीत एवं संरक्षित किया जा सकता है। माइक्रोफोन, लाउडस्पीकर जैसे ध्वनि–प्रसारक यंत्रों के आ जाने से अब कलाकारों एवं वाद्य यंत्रों की आवाज़ हजारों–लाखों लोग एक साथ सुन सकते हैं।

''हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अमूल्य ''सांस्कृतिक उत्पाद'' है, जो वैश्वीकरण के बाजार में विक्रय योग्य (Saleable) है और जिसकी भारी मांग भी है तथा जिसे खरीदने के लिए कोई भी मूल्य दिया जा सकता है। यह कोई तकनीक या तकनीकी उत्पाद नहीं है जो किसी नये उत्पाद में स्थानान्तरित हो जाता है। यह आधुनिक तकनीकी उत्पादों से कहीं अधिक, स्थायी एवं दीर्घावधि तक टिके रहने वाला उत्पाद है।''[5]

निष्कर्ष–

निष्कर्षतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक कालखण्ड में वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संगीत का अवलोकन वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत को एक संवेदनशील मन के साथ एक दूसरे के साथ साझा किया जा रहा है। वैश्वीकरण में वैज्ञानिक स्तर पर, नए–नए आविष्कारों ने महान् कलाकारों की कृतियों को संरक्षित रखने एवं विश्व स्तर पर जन–जन तक पहुँचाने के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि इलेक्ट्रानिक प्रौद्योगिकी, दूरसंचार प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी व सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी ने संगीत शिक्षा एवं शोध कार्य को अधिक व्यावहारिक व सरल कर दिया है। साथ ही साथ विश्व स्तर पर हो रही नित नई खोजों, घटनाओं, अनुसंधानों अथवा नवीन तकनीक की जानकारी वैश्वीकरण से सरलता से प्राप्त हो रही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. कु0 डॉ0 आकांक्षी, ''भारतीय संगीत और वैश्वीकरण'', पृ0सं0 27, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण, 2011
2. मित्तल अंजली, ''भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत'', पृ0सं0 58, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–110002, संस्करण–2016
3. चंद डॉ0 हुकुम, ''आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत'', पृ0सं0 28, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली–7, संस्करण–1998
4. कु0 डॉ0 आकांक्षी, ''भारतीय संगीत और वैश्वीकरण'', पृ0सं0 50, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण, 2011
5. कु0 डॉ0 आकांक्षी, ''भारतीय संगीत और वैश्वीकरण'', पृ0सं0 50, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण, 2011